असंगठित क्षेत्र के अन्तर्गत कार्यरत महिलाओं के लिए वरदान है स्वयं सहायक समूह (Self Help Group) : भोजपुर जिला के विशेष सन्दर्भ

डॉ. अमरेश कुमार*

भारत में 90 प्रतिशत महिलाएँ असंगठित क्षेत्र में कार्यरत हैं तथा 10 प्रतिशत संगठित क्षेत्र में कार्यरत हैं। संगठित एवं असंगठित क्षेत्र में विषमता है। असंगठित क्षेत्र में महिलाओं को दोहरी मार झेलनी पड़ती है। असंगठित क्षेत्र में कानूनी उपायों तथा सामाजिक विरोध की संभावनाओं के अभाव के कारण पुरूषों की तरह उन्हें भी बहुत सी वे सुविधाएँ तथा सुरक्षा उपाय उपलब्ध नहीं है, जो संगठित क्षेत्र श्रमिकों को उपलब्ध है। महिला होने के कारण उन्हें अतिरिक्त रूप से शोषण असमानता तथा अन्याय का शिकार होना पड़ता है। अधिकतर श्रमिक असंगठित क्षेत्र में हैं, जहाँ कोई व्यवस्थित सुविधा नहीं है। असंगठित क्षेत्र–कृषि, पशुपालन, निमार्ण, घरेलु काम, दुकानों पर काम तथा अन्य छोटे–छोटे संस्थानों में रोजगार। सबसे अधिक महिला श्रमिक कृषि क्षेत्र में काम करती है। फिर भी महिलाओं को किसान नहीं माना जाता। कृषि की भाँति निमार्ण क्षेत्र में भी महिला श्रमिकों के श्रम का मूल्यांकन भेदभावपूर्ण रहता है और एक जैसे काम के लिए उन्हें पुरूषों से कम पगार दी जाती है। घरेलू काम में लगी महिला श्रमिकों की सबसे बड़ी चुनौती स्वयं को यौन शोषण से बचाना है। असंगठित क्षेत्र में महिला कामगारों की संख्या पुरूषों की तुलना में ज्यादा है फिर भी लिंग के आधार पर भेदभाव होता है।

राज्य की असंगठित क्षेत्र की अर्थव्यवस्था में 1.3 करोड़ महिला कामगार है पर उन्हें विकास का लाभार्थी माना जाता हे न कि विकास में भागीदार कृषि का। राज्य के घरेलू उत्पाद में 21% योगदान है और महिलाएँ कृषि में प्रमुख योगदान 75% है। पशुपालन और कृषि में आधी से अधिक कामगार महिलाएँ हैं। कृषि से जुड़े महिलाओं के कार्य निराई, रोपाई, कटाई और सिर पर ढुलाई का काम करती हैं।

असंगठित क्षेत्र क अन्तर्गत कार्यरत महिलाओं की कई समस्याएं हैं इनके समाधान के लिए कई ऐसी संस्थाएं है जो प्रयासरत हैं। जैसे डगर समूह ने भोजपुर जिले के विभिन्न प्रखंडों में साक्षरता की रौशनी फैला दी। महिलाओं को सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति से उबारने के लिए कई गैर सरकारी संगठन एवं निजी संस्थाओं के प्रयास बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। गरीबी, बेरोजगारी एवं असंगठित क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं की समस्याओं के समाधान में अपनी सहायता स्वयं करने के लिए सामूहिक साक्षेदारी से बना एक गैर सरकारी संगठन महिलाओं द्वारा निर्मित स्वयं सहायता समूह एक वरदान सिद्ध हो रहा है। इन स्वयं सहायता समूह (Self Helf Group/ SHG) को सरकार भी समय–समय पर मदद करती है। महाजनी प्रथा एवं बैंक पद्धति के बीच इन्हीं गरीब लोगों की आवश्यकता पूर्ति के लिए स्वयं सहायता समूह एक वरदान के रूप में सामने आया हैं। ग्रामीण क्षेत्र में महिलाएँ कृषि, बागवानी, मत्स्य उद्योग, कुक्कुट पालन, और दुग्धशाला के क्षेत्र में काम करती हैं। शहरी क्षेत्रों में कपड़ा निर्माण करने वाली कारखानों में, खाद्य प्रसंस्करण और घरेलू कार्य से संबंधित रहीत है।[1]

भोजपुर प्रखण्ड के पाँच गाँवों– जमीरा, दौलतपुर, रामापुर सनदियाँ एवं महुलींके असंगठित क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं की स्थिति स्वयं सहायता समूह के माध्यम से सृदृढ़ हो रही है, उनका आर्थिक एवं सामाजिक दोनों प्रकार से स्थिति में सुधार देखा जा रहा है। ये महिलाएँ समाज के पिछड़े तथा दलित वर्ग से है जो अपने कढ़ाई, बुनाई, रंगाई, जूट से बने फर्श–चटाई, बेना, टोकरी, सूप आदि बांस सं संबंधित कार्यो का निष्पादन करती हैं। कुछ महिलाएं मिट्टी के बर्त्तन, मिट्टी के दीया, मूर्ति, चाय की कपटी, सुराही, घडा इत्यादि बनाती हैं तथा कुछ महिलाएं अगरबती, पापड़, आचार, मोमबती, बड़ी आदि वस्तुओं को बनाती हैं तथा अपना जीवकोपार्जन करती हैं। शिक्षित श्रमिक महिलाएँ ब्यूटी पार्लर भी चला रही हैं। इस कार्य के लिए आर्थिक मदद स्वयं सहायता समूह के माध्यम से कम ब्याज दर पर लघु ऋण (Micro Finance) से मिल जाता हैं। इस कार्य को धीरे–धीरे ये चुका देती हैं। इस धंधे से प्राप्त मुनाफा से अपने परिवार को आर्थिक मजबूती प्रदान कर रही है। उपरोक्त वर्णित सभी कार्य असंगठित क्षेत्र की महिला श्रमिक अपनी आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति को स्वयं सहायता समूह के माध्यम सृदृढ़ करती हैं। इससे देश के विकास में उनका अथक योगदान रहता है।[2]

स्वयं सहायता समूह समान रूप से आर्थिक एवं सामाजिक पृष्ठिभूमि वाले ऐसे लोगों का समूह होता है जो अपनी लघु या छोटी बचतों को साझे के रूप में निवेश करते हैं तथा आवश्यकता पड़ने पर समूह से अत्यंत ही कम ब्याज दर पर ऋण ले सकते है। सामान्यतः एक समूह में 10 से 20 तक सदस्य होते है इसमें ही वे अध्यक्ष, 2. सचिव, 3 कोषाध्यक्ष का चुनाव करती है। स्वयं सहायता समूह के जनक बंगला देश के अर्थशास्त्री, नोबेल विजेजा एवं गरीबों का मसीहा मोहमम्द यूनिसे को माना जाता है, जिन्होंने 1970 के दशक में सूक्ष्मवित आधारित संस्थाओं

***वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा**

की स्थापना की तिथि। इन संस्थाओं की 90 से अधिक सदस्यों ग्रामीण महिलाएं है जिनकी आर्थिक स्थिति (SHG) समूह के माध्यम से सुधार या उत्थान हो रहा है महिलाओं में आय इस क्रांतिकारी परिवर्तन के कारण ही मोहम्द यूनिस को वर्ष 2006 में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्होंने कहा कि ज्ञान एक डिग्री नहीं, एक सम्पति नहीं, बल्कि इसका व्यवहारिक उपयोग भी बहुत जरूरी है।

भारत में लघुवित्त (SHG) की उपचारिक शुरूआत 1992 नावार्ड के द्वारा संचालित पायलट प्रोजेक्ट से है। वर्ष 2002 में इतनी तेजी से और फिलहाल भारत में कम से कम 1.20 लाख समूह का निर्माण हुआ है जिनकी 20 करोड़ परिवार तक पहूँच बनाने का दावा किया जा रहा है उनमें से 92% प्रतिशत के आस–पास स्वयं सहायता समूह केवल महिलाओं के पास है।

गरीबी के चक्रव्यूह से निकलने, सूदखोरी एवं साहुकारों के शिकंजों से मुक्ति के मार्ग में SHG (समूह) एक वरदान है, जिससे महिलाएं परिवार की छोटी–मोटी आवश्यकताओं, बच्चों की शिक्षा, आपतकालिन समय में जरूरत पड़ने पर समूह द्वारा मिले ऋण से महिलाएँ को काफी मदद मिलती है समूह के माध्यम से बैंक में खाता होते है जो ऋण देने में मदद करते है।

लेकिन यह कड़वा सच है कि इसकी जितने बड़ दावे किये जाते है, वास्तव में इतनी सफलता नहीं मिली है स्वयं सहायता समूह के वर्तमान समय में 'महिला विकास निगम' (WDC) बिहार द्वारा समूहों को आर्थिक रूप से संबलता प्रदान करने तथा असंगठित क्षेत्र की कार्यकारी महिलाओं को मदद करने हेतु स्वशक्ति परियोजना (1997), स्वालम्बन परियोजना (जनवरी 2004) दीप परियोजना।

स्वशक्ति परियोजना– यह परियोजना अक्टूबर 1997 में महिला विकास निगम द्वारा शुरू कि गई। यह योजना विश्व बैंक, IFAC एवं भारत सरकार द्वारा वित्त पोषित है। बिहार विभाजन के बाद 2001 में मुज्जफरपुर में पहला जिला जहाँ 500 स्वयं सहायता समूह क्रियाशील थे।

स्वावलम्बन परियोजना– महिला विकास निगम द्वारा संचालित दूसरी योजना 'स्वावलम्बन परियोजना' जनवरी 2004 में शुरू कि गई जो 1000 स्वयं सहायता समूहों के रूप में बिहार के भोजपुर के साथ 10 जिलों के 20 प्रखंडो में शुरू किया गया इसका मुख्य उद्देश्य ज्यादा से ज्यादा महिलाओं को इस परियोजना के माध्यम से लाभ पहूँचाना था।

ग्रामीण महिलों को अत्मनिर्भर बनाता जीविका– जीविका परियोजना के माध्यम से भोजपुर प्रखण्ड की 13 पंचायतो के 55 गांवों में 356 स्वयं सहायता समूह एवं 18 ग्राम संगठन के जरिए 4228 महिलाओं की आत्म निर्भरता बढ़ायी जा रही है। भोजपुर क्षेत्र की महिलाएँ सशक्त हुई है। आज इस गाँव में महाजन

प्रथा भी समाप्त हो चुकी है। अन्नापूर्ण जीविका महिला ग्राम संगठन को जन वितरण प्रणाली का कार्य भी सौंपा गया है। संगठन के द्वारा अन्य सामाजिक सुधार जैसे गाँव में नशाखोरी एवं जुआ को बंद कराया है, साथ ही साथ गाँव में चल रही जन–कल्याणकारी योजनाओं पर भी निगरानी का कार्य कर रही है।[4]

प्रदान (प्रोफेशनल असिस्टैंट फॉर डेवलपमेंट एक्शन) देश के सात गरीब राज्यों बिहार, झारखंड, मध्य प्रदेश, राजस्थान, छत्तीसगढ़, उड़ीसा, एवं पश्चिम बंगाल में सक्रिय रूप से कार्य कर रहा है। प्रदान के कार्यकर्ता इन राज्यों के बेहद पिछड़े हुए इलाकों में काम कर रहे है। प्रदान स्वयं सहायता समूह बनाता है और जरूरतमंद लोगों की मदद करता है।[5]

इस तरह स्वयं सहायता समूह व्यवस्था गाँवों में गरीबी दूर करने और महिला सशक्तिकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि स्वयं सेवी संगठन कमजोर एवं असंगठित क्षेत्र की अंतर्गत कार्यकारी महिलाओं के लिए वरदान है जो महिलाओं का सशक्तिकरण में सहायक सिद्ध हो रहा है।

संदर्भ

1. भारतीय समाज में महिलाएँ (महिला और कार्य)– देसाई निरा, पृ. 19
2. क्वाटरली इम्पलायमेंट रिव्यू (2000) श्रम मंत्रालय, नई दिल्ली, पृ. 13–15
3. मार्गदर्शिका 2008 (महिला विकास निगम) बिहार, समाज कल्याण
4. प्रवीण कुमार पाठक, कुरूक्षेत्र, जून 2009
5. सोमैन–विस्वास–कुरूक्षेत्र, जून–2009